Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July 2024 5(7), 1417–1422

A STUDY OF EMOTIONAL INTELLIGENCE OF URBAN AND RURAL STUDENTS OF GRADUATE LEVEL

स्नातक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

Chanchal Kumari [1], Deepshikha Saxena [2]

[1] Research Student, Institute of Education and Research, Mangalaytan University, Aligarh (U.P.), India
[2]Research Supervisor, Institute of Education and Research, Mangalayatan University, Aligarh (U.P.), India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i7.2024.5719

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Emotional intelligence plays an important role in personal, social and academic life. Which directly and indirectly affects the behavior of the person. The purpose of the present study is to study the effect of geography on emotional intelligence of urban and rural students. For which 200 undergraduate students studying in colleges affiliated to Bundelkhand University, including 100 urban areas (50 male and 50 female) and 100 rural area (50 male and 50 female) have been taken. Dr. for data collection. Arun Kumar Singh and Dr. Emotional intelligence scale developed by Shruti Narayan has been used and the data was analyzed using mean, standard deviation and t-test. The conclusion of the research found that there is a significant difference in the emotional intelligence of urban and rural students. No significant difference was found between urban and rural girl students while significant difference was observed between rural and urban students. The findings of this research show that students' emotional intelligence is influenced by their social and educational environment, so there is a need for teachers, parents, policy makers and mental health experts to develop effective strategies that help students develop their emotional competence and competence.

Hindi: व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षिक जीवन में संवेगात्मक बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर भौगोलिक प्रभाव का अध्ययन करना है। जिसके लिए बुंदेलखंड विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के 200 विद्यार्थी जिसमें 100 शहरी परिक्षेत्र (50 छात्र एवं 50 छात्राएं) तथा 100 ग्रामीण परिक्षेत्र (50 छात्र एवं 50 छात्राएं) से लिए गए हैं। आंकड़ों के संग्रहण के लिए डॉ. अरुण कुमार सिंह एवं डॉ. श्रुति नारायण द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया है एवं आंकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं टी-टैस्ट के द्वारा किया गया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया जबकि ग्रामीण और शहरी छात्रों के मध्य सार्थक अंतर देखा गया। इस शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर उनके सामाजिक और शैक्षिक परिवेश का प्रभाव पड़ता है इसलिए आवश्यकता है कि शिक्षकों, अभिभावकों, नीति निर्माताओं और मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा ऐसी प्रभावी रणनीतियां तैयार हो जो विद्यार्थियों की संवेगात्मक दक्षता और क्षमता को विकसित करने में सहायक हो।

Keywords: Emotional Intelligence, Direct, Geography, Emotional Competence, Educational Environment, Students संवेगात्मक बुद्धि, प्रत्यक्ष, भौगोलिक, संवेगात्मक क्षमता, शैक्षिक परिवेश, विद्यार्थी

1. प्रस्तावना

भारत की संस्कृति व सभ्यता धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व ऐतिहासिक विविधताओं व परंपराओं के कारण विश्व भर में अपना विशेष स्थान रखती है। जिसमें वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, पुराण जैसे ग्रंथ स्थान रखते हैं। जो प्रत्येक व्यक्ति को जीवन पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करते हैं। वहीं दूसरी और आधुनिकता व तकनीकी ने भारतीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। वर्तमान परिस्थितियों का आंकलन करने पर स्पष्ट होता है कि तकनीकी व आधुनिकता ने आज की पीढ़ी को विभिन्न अवसर व सुविधाएं प्रदान की हैं लेकिन साथ ही उनके मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन, संवेगों, क्षमताओं, योग्यताओं, शिक्षा आदि पर भी विशेष प्रभाव डाला है। इसके लिए आवश्यक है कि वर्तमान पीढ़ी को तकनीकी व प्रौद्योगिकी के विषय में जागरुक करते हुए सही दिशा में अग्रसर किया जाए। मानव जीवन में संवेग व उसको अनुभव करने की क्षमता बहुत महत्वपूर्ण होती है। संवेग व्यक्ति के व्यक्तित्व को सजीव और सक्रिय बनाने में मदद करते हैं तथा उसे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनुभव प्रदान करते हैं। संवेग व्यक्ति का एक महत्वपूर्ण गुण है जो जीवन से संबंधित कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करते हैं। यह सिर्फ व्यक्ति की सफलता में ही नहीं बल्कि समाज की प्रगति और विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। संवेग द्वारा समाज में सकारात्मक परिवर्तन, उत्साह, प्रेरणा का संचार होता है तथा समाज की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक स्थिति को सुधारने व विकसित करने में मदद मिलती है।

संवेग शब्द का अंग्रेजी रूपांतर श्म्उवजपवदश् है, जो लैटिन भाषा के शब्द श्म्उवअमतमश् से बना है, जिसका अर्थ है - उत्तेजित करना अर्थात संवेग व्यक्ति की उत्तेजित अवस्था का दूसरा नाम है। इस प्रकार संवेग को किसी विशेष आंतरिक या बाहरी घटना की प्रतिक्रिया में अनुभव किया जाता है। यह एक ऐसी जटिल अवस्था होती है जिसमें शारीरिक प्रतिक्रियाएं, अभिव्यंजक व्यवहार के साथ-साथ आत्मनिष्ठ भाव भी होता है। संवेग के द्वारा चिंतन में सहायता मिलती है और चिंतन का प्रयोग संवेगों के विश्लेषण और नियंत्रण के लिए किया जाता है। संवेगात्मक बुद्धि सामाजिक व सांवेगिक कौशलों का वह समूह है जो उस व्यवहार को प्रभावित करती है जिसके द्वारा हम स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं व समझते हैं, सामाजिक संबंधों का विकास करते हैं तथा चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रभावी और सार्थक तरीके से संवेगिक जानकारी का प्रयोग करते हैं। 'संवेगात्मक बुद्धि स्वयं एवं अन्य के संवेगों को पहचानने और उनको अच्छी तरह से प्रबंधित करने की क्षमता है।' (गोलमैन 1998द्ध।

सलोवी एवं मेयर ने 1990 में संवेगात्मक बुद्धि शब्द को सामाजिक बुद्धि के उप समूह के रूप में परिभाषित किया - 'यह व्यक्ति की स्वयं अपनी भावनाओं और संवेगों की निगरानी करने की क्षमता है ताकि उनके बीच अंतर किया जा सके और इस जानकारी का उपयोग व्यक्ति के चिंतन और कार्यों के मार्गदर्शन के लिए किया जा सके'। इस शब्द को प्रसिद्धि डेनियल गोलमैन की पुस्तक 'संवेगात्मक बुद्धि' द्वारा प्राप्त हुई। इस पुस्तक में उन्होंने तर्क दिया कि 20ः मामलों में उच्चतम बुद्धिलब्धि वाले लोग सामान्य बुद्धि लब्धि वाले लोगों से बेहतर प्रदर्शन करते है जबकि 80ः मामलों में सामान्य बुद्धिलब्धि वाले लोग उच्च बुद्धिलब्धि वाले लोगों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। संवेगात्मक बुद्धि कार्यस्थल में प्रदर्शन और सफलता का अनुमान लगाने में सक्षम होती है। जिस तरह बुद्धि का बुद्धिलब्धि (प्फ) के माध्यम से मापन किया जाता है उसी तरह सांवेगिक बुद्धि को सांवेगिक बुद्धिलब्धि (म्फ) द्वारा इंगित किया जाता है। संवेगात्मक बुद्धि एक ऐसी विशिष्ट क्षमता है जिसकी विशेषताएं व्यक्तित्व और बुद्धि से भिन्न है। व्यक्तित्व और बुद्धि अपेक्षाकृत रूप से स्थिर होते हैं और 18.20 वर्ष की आयु के पश्चात इनमें परिवर्तन होना कठिन होता है परंतु संवेगात्मक बुद्धि में अधिक गतिशील घटक समाहित होते है, जिसमें समय के साथ विकसित और संवर्धन होने की क्षमता ळें

2. संवेगात्मक बुद्धि के आयाम

संवेगात्मक बुद्धि के निम्नलिखित चार आयाम हैः-

1.संवेग बोध - एक व्यक्ति द्वारा स्वयं अपनी व दूसरों की शारीरिक स्थिति, भावनाओं और विचारों को पहचानने की क्षमता रखना।

2.प्रेरणा को समझना - आशावादी होना और उच्च उपलब्धि प्राप्त करने के लिए पहल करने की प्रवृत्ति होना।

3.परानुभूति - परानुभूति से तात्पर्य स्वयं को मानसिक रूप से दूसरों के साथ पहचानना और किसी व्यक्ति या वस्तु को सटीक रूप से समझना। यह समझ कि दूसरा व्यक्ति कैसा महसूस कर रहा है, उनके दृष्टिकोण को समझना, दूसरों का विकास करना, विविधता का लाभ उठाना, समूह की मनोदशा को समझना, राजनीतिक वास्तविकताओं को समझना, और दूसरों के जीवन में रुचि लेने की प्रवृत्ति से होता है।

4.सामाजिक कुशलता - दूसरों के साथ संबंधों को बेहतर तरीके से प्रबंध करने और संभालने की क्षमता में सक्षम होना।

3. संबंधित साहित्य का अध्ययन

ए. भारती और आर.गायत्री ;2025द्ध के अध्ययन के निष्कर्ष अनुसार छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सुधार करके हमें ऑनलाइन सीखने के लिए तत्परता के स्तर को सुधारने में मदद मिलेगी। बिरणदीप कौर ;2020द्ध ने मोंगा जिले के बौद्धिक रूप से प्रतिभाशाली किशोरों की सामाजिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि किशोर छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं है तथा उनकी सामाजिक स्थिति और संवेगात्मक स्थिरता में कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया। विभिन्न स्थितियों में किशोर आसानी से समायोजित हो जाते हैं। भारवद, बी. महेश (2015) के शोध का उद्देश्य स्कूल के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन का अध्ययन करना

था इसके लिए उन्होंने तीन समूह का चयन किया, पहला समूह संकाय का प्रकार, दूसरा समूह क्षेत्र का प्रकार तथा तीसरा समूह लिंग से संबंधित था। इस अध्ययन के लिए यादृश्चिक विधि द्वारा 240 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। इसमें 120 विद्यार्थी विज्ञान वर्ग तथा 120 विद्यार्थी कला वर्ग से लिए गए। हर एक समूह में 60 विद्यार्थी गांव से एवं 60 विद्यार्थी शहर के लिए गए। जिसमें 30 महिलाएं व 30 पुरुष रखे गए। हर समूह में 30 विद्यार्थियों का चयन किया गया। आंकड़ों के संकलन के लिए डॉ पी. पी. पटेल तथा डॉ. एच. पी. पटेल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी तथा एम. एम. बैल द्वारा निर्मित समायोजन सूची का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में शहरी और ग्रामीण छात्र और छात्राओं के मध्य संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में सार्थक अंतर था। अतः शहरी और ग्रामीण छात्रों में छात्राओं की तुलना में संवेगात्मक बुद्धि अधिक पाई गई। यह भी देखा गया कि संकाय और लिंग के आधार पर विज्ञान और कला वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में महत्वपूर्ण अंतःक्रिया थी तथा शहरी और ग्रामीण छात्रों और छात्राओं के समायोजन स्तर में भी अंतर था। अतः शहरी और ग्रामीण छात्राएं छात्रों की तुलना में अधिक समायोजित पाई गई। मोहम्मद खान मोहम्मद मुजफ्फर लोन (2015) के अध्ययन के निष्कर्ष में पता चला कि ग्रामीण और शहरी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था लेकिन संवेगात्मक बुद्धि के कारक-डी (भावनात्मक स्थिरता) और कारक - एच (मूल्य अभिविन्यास) पर दोनों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है। . कांत, रवि (2019) के शोध का उद्देश्य विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर को जानने तथा संवेगात्मक बुद्धि में लिंग, रहने का स्थान, पाठ्यक्रम का स्तर तथा अध्ययन के विद्यालय के आधार पर अंतर जानने के लिए अध्ययन किया। यह सर्वेक्षण केंद्रीय विश्वविद्यालय दक्षिण बिहार (गया) भारत के 200 विद्यार्थियों पर किया गया। परिणामों में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि का स्तर बहुत अधिक पाया गया। निष्कर्ष में शिक्षा के विद्यालय के विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि का स्तर कानून और प्रशासन के विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक था। छात्रों और छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में भी सार्थक अंतर पाया गया। छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान अंक अधिक था। संवेगात्मक बुद्धि के आधार पर स्नातक और परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। मध्यमान अंक के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि अधिक पाई गई। रहने के स्थान की कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं थी लेकिन ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों से अधिक थी। कर धीमान, साहा बीरबल, मोंडल भीम चंद्र (2014) ने माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके लिंग और रहने के स्थान से संबंध पर अध्ययन किया। संवेगात्मक बुद्धि के मापन के लिए मोंडल संवेगात्मक बुद्धि सूची का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के लिए पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के 235 विद्यार्थियों का यादृचिछक चयन किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए एनोवा तथा टी टेस्ट का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों के संवेगात्मक विकास को बढ़ाने में रहने के स्थान की सार्थक भूमिका होती है जबकि लिंग का छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

4. शोध उद्देश्य

1 स्नातक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।

2. स्नातक स्तर की शहरी व ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।

3. स्नातक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. स्नातक स्तर के शहरी व ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

2. स्नातक स्तर की शहरी व ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

3. स्नातक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

शोध विधि - प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श - झांसी जिले के बुंदेलखंड विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों के स्नातक स्तर के 200 विद्यार्थी का चयन साधारण यादृश्चिक विधि द्वारा किया गया है। जिसमें 100 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र से तथा 100 विद्यार्थी शहरी क्षेत्र से है। जिसका विवरण निम्नलिखित है:

क्षेत्र	छात्र	छात्राएं	योग
ग्रामीण	50	50	100
शहरी	50	50	100
योग	100	100	200

5. शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि के मापन के लिए डॉ. ऐ. के. सिंह व डॉ. श्रुति नारायण द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया है। इस परीक्षण में 31 पद हैं। जो संवेगात्मक बुद्धि का मापन चार आयामों के आधार पर करते हैं। यह आयाम है- भावनाओं को समझना, प्रेरणा को समझना, परानुभूति एवं संबंधों को संभालना। इसकी विश्वसनीयता 0.86 पाई गई तथा वैधता भी 0.86 पाई गई जो 0.01 के सार्थकता स्तर पर महत्वपूर्ण है।

5.1. शोध परिसीमन

1.प्रस्तुत शोध झांसी जिले के महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर किया गया है।

2.इस शोध में केवल स्नातक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

3.आंकड़ों का संग्रहण करने हेतु मानकीकृत उपकरण का प्रयोग कर किया गया है।

6. आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 01-स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

इस परिकल्पना के सत्यापन के लिए स्नातक स्तर के 50 शहरी तथा 50 ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के प्राप्तांको को व्यवस्थित किया गया। तत्पश्चात प्रत्येक वर्ग के प्रदतों का मध्यमान और मानक विचलन ज्ञात कर दोनों प्रतिदर्शों के प्राप्तांकों का टी मान ज्ञात किया गया। जिसे तालिका क्रमांक 01 में दर्शाया गया है:-

तालिका-01

वर्ग	N	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि (D.F.)	T-VALUE	सार्थकता
शहरी छात्र	50	23.7	2.95	98	3.01	सार्थक अंतर है।
ग्रामीण छात्र	50	21.84	3.22			

विश्लेषण: उपरोक्त तालिका क्रमांक 01 में संवेगात्मक बुद्धि मापनी पर प्राप्त स्नातक स्तर के 50 शहरी एवं 50 ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमश: 23.7 व 21.84 एवं मानक विचलन क्रमश: 2.95 व 3.22 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता की कोटि (क)ि 98 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी मान 3.01 है। जो तालिका में दिए गए मान 1.98 से अधिक है। अत: यह स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है। अत: हमारी यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना 02 स्नातक स्तर की शहरी व ग्रामीण छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

इस परिकल्पना के सत्यापन के लिए स्नातक स्तर की 50 शहरी तथा 50 ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के प्राप्तांको को व्यवस्थित किया गया। तत्पश्चात प्रत्येक वर्ग के प्रदतों का मध्यमान और मानक विचलन ज्ञात कर दोनों प्रतिदर्शों के प्राप्तांकों का टी मान ज्ञात किया गया। जिसे तालिका क्रमांक 02 में दर्शाया गया है:

तालिका – 02

वर्ग	N	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि (D.F.)	T-VALUE	सार्थकता
शहरी छात्रा	50	23.30	3.27	98	1.18	सार्थक अंतर है।
ग्रामीण छात्रा	50	22.58	2.80			

विश्लेषण: उपरोक्त तालिका क्रमांक 02 में संवेगात्मक बुद्धि मापनी पर प्राप्त स्नातक स्तर की 50 शहरी एवं 50 ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमश: 23.30 व 22.58 एवं मानक विचलन क्रमश: 3.27 व 2.80 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता की कोटि (क)ि 98 के लिए 0.05

सार्थकता स्तर पर टी मान 1.18 है। जो तालिका में दिए गए मान 1.98 से कम है। अतः यह स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः हमारी यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना 03 स्नातक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

इस परिकल्पना के सत्यापन के लिए स्नातक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के 200 विद्यार्थियों के प्राप्तांको को व्यवस्थित किया गया। तत्पश्चात प्रत्येक वर्ग के प्रदतों का मध्यमान और मानक विचलन ज्ञात कर दोनों प्रतिदर्शों के प्राप्तांको का टी मान ज्ञात किया गया। जिसे निम्न तालिका क्रमांक 03 में दर्शाया गया है:-

तालिका – 03

वर्ग	N	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि (D.F.)	T-VALUE	सार्थकता
शहरी	100	24.26	3.33	198	5.39	सार्थक अंतर है।
ग्रामीण	100	21.65	2.52			

विश्लेषण उपरोक्त तालिका क्रमांक 03 में संवेगात्मक बुद्धि मापनी पर प्राप्त स्नातक स्तर के 100 शहरी एवं 100 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्राप्ताकों का मध्यमान क्रमशः 24.26 व 21.65 एवं मानक विचलन क्रमशः 3.33 व 3.52 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता की कोटि (क)ि 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी मान 5.39 है। जो तालिका में दिए गए मान 1.98 से अधिक है। अतः यह स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है। अतः हमारी यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

7. व्याख्या

1) शहरी क्षेत्रों में विद्यार्थियों को स्कूल, कोचिंग, कार्यशालाओं आदि में भाग लेने की अधिक सुविधा होती है तथा विभिन्न जाति, धर्म, संस्कृति के लोगों के साथ रहने से उन्हें समझने व उनके साथ समायोजन करने का अनुभव होता है। जिसके कारण उनमें अपने संवेगों को नियंत्रित करने व दूसरों की भावनाओं को समझने की क्षमता विकसित हो जाती है। इसके विपरीत ग्रामीण विद्यार्थियों को संसाधनों की कमी होने के साथ साथ उचित मार्गदर्शन व अवसर नहीं मिलता है। इनका समाजिक दायरा सीमित होता है। जिसके कारण वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। इनमें सामाजिक कौशल, आत्म नियंत्रण और सहानुभूति जैसे गुण कम विकसित होते हैं।

2) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। वर्तमान शिक्षा पद्धति, सामाजिक परिवर्तन व तकनीकी ने यह अंतर कम किया है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में हो रहे उपायों व नवीन परिवर्तनों ने छात्राओं की मानसिकता को समान बनाने में मदद की है।

3) शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी क्षेत्र के छात्र सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण दुनिया भर की सोच और जीवनशैली से परिचित होते हैं। जिसके कारण वे आत्मविश्वासी होते है तथा भावनात्मक रूप से संतुलित व्यवहार करते हैं। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्र के छात्र अत्यधिक प्रतिस्पर्धा और मानसिक तनाव के कारण अपनी भावनाओं को पहचानने और प्रकट करने में कमजोर होते हैं।

8. निष्कर्ष

1) स्नातक स्तर के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि अपेक्षाकृत ग्रामीण विधार्थियों से अधिक होती है।
2) छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पड़ता है।
3) शहरी छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक होती है।

9. सुझाव

उपरोक्त अध्ययन के पश्चात सभी विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि समान रूप से हो इसके लिए शोधकत्री द्वारा सुझाव निम्नवत है:-

1) स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में संवेगात्मक बुद्धि को शामिल किया जाए।
2) विद्यार्थियों को सामुदायिक कार्यों का दायित्व प्रदान किया जाए।
3) महाविद्यालयों में ध्यान व योग को अनिवार्य किया जाए।
4) ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

Bharathy, A. and Gayathiri, R., 2025. Emotional Intelligence Promoting the Sustainability of Online Learning Readiness. In *Securing the Future through Sustainability, Health, Education, and Technology* (pp. 185-195). Routledge.

कौर, बी., 2020. ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ इंटेलेक्चुअली गिफ्टेड एडोलिसेंटस इन रिलेशन तो सोशल मैच्योरिटी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन एंड मैनेजमेंट स्टडीज ,10(4) पी पी. 452-456.

कांत, आर., 2019. इमोशनल इंटेलिजेंसरू ए स्टडी ऑन यूनिवर्सिटी स्टूडेंटस. जनरल ऑफ़ एजूकेशन एंड लर्निंग (एजूलर्न), 13(4), पीपी. 441- 446.

Alam, M. (2018). A study of emotional intelligence of adolescent students. International Journal of Indian Psychology, 6(3), 127-133. DIP: 18.01.011/20180603, DOI:10.25215/0603.011

Khan, M. and Lone, M.M., 2015. Emotional intelligence of rural and urban post graduate students of Kashmir University. *Periodic Research*, *3*(4), pp.181-184.

भारवद, एम.बी., 2015. ए स्टडी ऑफ़ इमोशनल इंटेलिजेंस एंड एडजेस्टमेंट अमोंग स्कूल स्टूडेंट्स. द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंडियन साइकोलॉजी, 2 (2), पी पी. 24-31.

कर, डी., शाह, बी. एंड मोंडल, बी.सी., 2014. मेजरिंग इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू जेंडर एंड रेजिडेंसरू एन इमपीरिकल स्टडी. अमेरिकन जनरल ऑफ एज्युकेशनल रिसर्च, 2(4), पी पी.193-196.

गोलमैन, डी. (1995). इमोशनल इंटेलिजेंस- व्हाय ईट कैन मैटर मोर दैन आई क्यू ?. न्यू यॉर्क रू बेनटैम बुक्स.

सिंह, ऐ. के, 2001. उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान. मोतीलाल बनारसी दास. दिल्ली ।

10 मंगल, एस. के. (2010). ‘‘शिक्षा मनोविज्ञान’’, पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।